IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

'बौद्ध धर्म में कुशीनगर का महत्व : एक समीक्षा'

पवन कुमार प्रजापति
डॉ० बीरेन्द्र मणि त्रिपाठी
ने० ग्रा० भा० मानित वि० वि०, प्रयागराज

कुशीनगर की पहचान उत्तर प्रदेश के देवारिया जिले में स्थित कसिया स्थल से की गयी है। दिव्यावदान, दीघनिकाय, अशोक के आठवें वृहद् शिलालेख, कनिष्क के सिक्कों तथा फाहियान एवं ह्वेनसांग के यात्रा विवरणों से कुशीनगर की विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है।[1] महाजनपदकालीन गणराज्यों में मल्लगणराज्य की राजधानी कुशीनगर थी। इसे कुशावती अथवा कुशीनारा भी कहा गया है। कनिघंम ने इस नगर की पहचान उत्तर प्रदेश के देवरिया जिले में स्थित आधुनिक कसिया नामक ग्राम से किया है। 1876, 1904 तथा 1912 ई0 में सम्पादित उत्खनन कार्यो के फलस्वरूप उस नगर के पूर्व बौद्धकालीन तथा बौद्धकालीन वैभव की झलक उपलब्ध हुई। मृत्युशय्या पर पड़ें बुद्ध और आनन्द के संवाद से यह पता चलता है कि यह नगर प्राचीन भारत के तत्कालीन बड़े नगरों के समान विशाल नही थे, लेकिन नगरों के चारों ओर सिंहद्वार थे। उत्तर की ओर शालवन था और पूर्व की ओर हिरण्यवती नदीं प्रवहमान थी। गणराज्यों की प्रमुख विशेषता संस्थागार इस नगर के चौराहे पर स्थित था।[2]

भगवान बुद्ध के महापरिनिर्वाण भूमि होनें के कारण कुशीनगर का धार्मिक महत्व अपेक्षाकृत बहुत अधिक था। पावा में अपने शिष्य चुन्द के घर भोजन करनें से पीड़ित बुद्ध बीमार अवस्था में ही अपने प्रिय नगर कुशीनगर आ गये। कुशीनगर में स्थित शालवन में उनकी मृत्यु हुई। एक बड़े समारोह के साथ बुद्ध का दाह–संस्कार सम्पादित कर मल्लों नें उनकें अवशेषों पर एक विशाल

स्तूप निर्मित करवाया। इस प्रकार कपिलवस्तु और लुम्बिनी की भाँति कुशीनगर भी एक महान बौद्ध तीर्थ के रूप में स्थापित हुआ।[3]

मगध नरेश आजातशत्रु ने कुशीनगर पर आक्रमण कर जीत लिया और इसे मगध साम्राज्य में मिला लिया। बौद्ध तीर्थो की यात्रा करते समय मौर्य सम्राट अशोक यहाँ पर भी आया था। उनके द्वारा बनवाये गये स्तूपों और विहारों का वर्णन ह्वेनसांग ने अपने यात्रा विवरण में किया है। कनिष्क ने अपने शासनकाल में यहाँ स्तूपों और चैत्यगृहों का निर्माण करवाया। चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के समय आये हुए चीनी बौद्ध यात्री फाहियान ने यहाँ के स्मारकों को देखा था। गुप्त शासक कुमार गुप्त प्रथम के शासनकाल में हरिवलस्वामी ने कुशीनगर में प्रसिद्ध परिनिर्वाण मूर्ति की स्थापना करवायी थी और मूर्ति के पास ही अशोक द्वारा निर्मित स्तूप का जीर्णोद्धार करवाया था। गुप्तकालीन प्राप्त सिक्कों, मृण्मुद्राओं और मूर्तियों से गुप्तयुग में कुशीनगर की प्रसिद्धि सिद्ध होती है।[4]

सातवीं शताब्दी में सम्राट हर्ष के समय में आयें हुए बौद्ध यात्री ह्वेनसांग ने कुशीनगर में ईटों के बने हुए विहार को देखा था जिसमें महापरिनिर्वाण मुद्रावाली मूर्ति स्थापित थी। इस समय यहाँ पर बौद्ध भिक्षुओं का निवास स्थान था। सातवीं शताब्दी के अन्त में चीनी यात्री इत्सिंग भारत में बौद्ध धर्म की यात्रा पर आया था। इत्सिगं के विवरण से पता चलता है कि शालवन तथा मुकुट बन्धन चैत्य पवित्र तीर्थ मानें जातें थे। कुशीनगर विहार में लगभग सौ बौद्ध भिक्षु रह कर बौद्ध धर्म का अध्ययन करतें थे। कुशीनगर के संघाराम में समय जानने के लिए जल घड़ी का प्रयोग किया जाता था।[5]

ग्यारहवीं शताब्दी में कलचुरीवंशी शासकों का यहाँ आधिपत्य था। उनका एक शिलालेख मिला है जो शंकर, पार्वती, बुद्ध और तारा की स्तुति से प्रारम्भ होता है। तेरहवीं शताब्दी के मुसलमानों के आक्रमणों से कुशीनगर भी बच न सका और उसें भी आग लगाकर नष्ट कर दिया। तिब्बती धर्मयात्री लामा तारानाथ ने लिखा है कि तुर्की हमले के कारण बचें हुए बौद्ध भिक्षु[6] अपनें प्राण बचाने के लिए तिब्बत और नेपाल की ओर पलायन कर गये।

आधुनिक युग में कुशीनगर कों प्रकाश में लाने का कार्य सबसे पहलें बुकानन और विल्सन ने प्रारम्भ किया। 1854ई0 में प्रोफेसर विल्सन ने यह मत प्रतिपादित किया था कि कसिया ही प्राचीन कुशीनगर है। 1876ई0 में कनिघंम ने इस नगर कों जीर्णोद्धार करवाया। कुशीनगर के पुरानें टीलों की खुदाई हुई जिसमें स्तूप, विहार एवं मन्दिर के अवशेष मिलें है। कुसीनगर का सर्वप्रसिद्ध स्मारक बुद्ध की विशाल मूर्ति है जिसें शयनावस्था में दिखाया गया है। इस पर धातु की चादर चढ़ी हुई है। इसी स्थान से 10.6 फीट ऊँची बुद्ध की अन्य मूर्ति भी मिलती है।[7] 1904–1907ई0 तक यहाँ के उत्खनन कार्य डा0 फोगेलू तथा पं0हीरानन्द शास्त्री की देखरेख में सम्पन्न हुआ।

बौद्ध साहित्य और उत्खनन कार्यो से कुशीनगर में निम्न स्मारक प्रकाश में आये है जो इस प्रकार है–शालवन का स्मारक, परिनिर्वाण मूर्ति, परिनिर्वाण स्तूप, मायाकुँवर का मन्दिर, मुकुटबन्धन चैत्य स्तूप आदि। कुशीनगर के आधुनिक बौद्ध स्मारकों में 'वर्मी बौद्ध सीमा विहार, भदन्त चन्द्रमणि स्तूप, संग्रहालय, जापानी घंटाघर तथा विभिन्न बौद्ध विहार मुख्य है।[8] श्रावस्ती– वाराणसी मार्ग का प्रमुख केन्द्र होने के कारण इसका आर्थिक–व्यापारिक महत्व स्थापित था। कुशीनगर के व्यापारियों एवं शिल्पियों के द्वारा मुद्रा परिचालन के साक्ष्य भी प्राप्त हुए है।

सन्दर्भ

1. उत्तर प्रदेश सरकार का गजट 2009 पृ0 190
2. साकेत कुमार त्रिपाठी, ऐतिहासिक मानचित्रावली, अभिव्यक्ति प्रकाशन प्रयागराज 2001 पृ0 46
3. वहीं।
4. डा0 अँगने लाल, उत्तर प्रदेश के बौद्ध केन्द्र, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान लखनऊ 2006 पृ0 119
5. डा0 अँगने लाल, उत्तर प्रदेश के बौद्ध केन्द्र, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान लखनऊ 2006 पृ0 120
6. साकेत कुमार त्रिपाठी, ऐतिहासिक मानचित्रावली, अभिव्यक्ति प्रकाशन प्रयागराज 2001 पृ0 46
7. के.सी. श्रीवास्तव, प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति, यूनाइटेड बुक डिपो, प्रयागराज 2007 पृ0 922
8. डा0 अँगने लाल, उत्तर प्रदेश के बौद्ध केन्द्र, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान लखनऊ 2006 पृ0 124